सत्य

राम नाम सत्य है, सत्य बोलो गत्य है। अजगर ने समझा कृष्ण को खाही लूँगा और पचा जाऊँगा पर पेट के अंदर चली कटारियों से खंड-खंड होकर आतिशबाजी के अनार की तरह अजगर उड़ गया और कृष्ण वैसे के वैसा ही शेष रहा। क्या तुम इस सत्य रूप कानून को खा सकते हो, दबा सकते हो, छिपा सकते हो? इस सत्य को किसी का लिहाज नहीं और तो और खुद कृष्ण के कुल वाले जब सत्य को हँसी मैं उड़ाने लगे और अपनी तरफ से इसे रेत मैं रगड़-रगड़ कर मिला भी गये, यह सत्य मटिया मेट होकर भी फिर उगा और क्या कृष्ण और क्या यादव, सबके सब को हड़प कर गया, द्वारिका पर पानी फिर गया।

अरे प्यारे! विषयों के वश रहना तो पराधीनता में मरना है। तुम सत्य रूप हो। अपने असली सुदर्शन चक्र को देखो। तुम्हारे भय से सूर्य काँपता है। पवन चलती है। समुद्र उछलता है। निर्मोह निरंकार हुए सत्य आत्म ज्योति शरीर में इस प्रकार फैलती है जैसे फनूस में से प्रकाश।

बोलो प्रेम से सच्चिदानंद सनातन ब्रह्म की जय।